thearyasamaj.org

प्रकाशन की तिथि 01.2.2015

ओ३म्

एक प्रति मूल्य : रु० 4.00

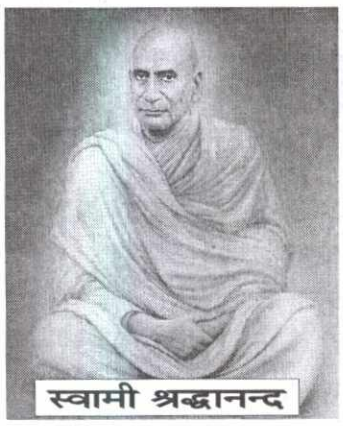

शुद्धि समाचार

सन् 1923 में स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा का मासिक मुखपत्र

माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः । अथर्ववेद 12.1.12

भूमि मेरी माता है और मैं उस मातृभूमि का पुत्र हूँ।

वर्ष 38 अंक 02

"शुद्धि ही हिन्दू जाति का जीवन है"

वार्षिक शुल्क : 50 रुपये

आजीवन शुल्क : 300 रुपये

फरवरी, 2015 विक्रम सम्वत् 2071 माघ - फाल्गुन

सनातन धर्मी नेता - पं. मदनमोहन मालवीय

दूरभाष : 011-23847244

परामर्शदाता : श्री हरबंस लाल कोहली ☼ श्री विजय गुप्त ☼ श्री सुरेन्द्र गुप्त ☼ प्रबन्धक : श्री नरेन्द्र मोहन वलेचा

मैं हिन्दी हूँ

– आशु कवि विजय गुप्त

हिमालय की विशाल पर्वत श्रृंखलाएं जो दूर-सुदूर तक फैली हैं, उन पर छाने वाले, मंडराने वाले बादलों की सघनता के मध्य जब आप उससे संचारित होने वाली स्वर लहरी के शब्दों की पहचान करोगे और विशाल मेघों के झुण्ड जब आकाश में उड़ते हुए धरा पर अपने मोतियों की सौगात बरसाते हैं, तब उनकी भी स्वर लहरी के बीच किसी पुरानी पहचान की झलक पाओगे, तब आप स्वयं समझ जाएंगे कि वो कोई और नहीं, बस वो मैं ही हूँ, मैं हिन्दी हूँ।

मैं वो हिंदी हूँ, जिसने कलाओं, साहित्य और विज्ञान को समृद्ध किया। बादल धरा पर बरस गए, खेत खलिहानों में हरियाली अपना रुप निखारती है, प्रकृति मानव जीवन संग अन्य प्राणियों को भी अपनी ओर से नई आशाओं का उपहार देती है। खेतों में फसलें लहलहाती हैं, हवाएं गीत गाती हुई, सम्पूर्ण पृथ्वी पर जब नए जीवन को उल्लसित करती हैं, उपवन में नई कलियां और फुल प्रमुदित होते हैं, तितलियां, भवरें उनके सौन्दर्य पर लालायित होते हुए प्रणय के गीत गाते हैं, सुन्दर पक्षी वृक्षों की डाल पर चहचहाते हैं, कोयल की कू कू कू मुझे कहती है - हिंदी तू ही तू ही तू... अर्थात् मैं ही वो हिंदी हूँ जो चराचर की स्वर लहरी में गुंजायमान हूँ। मानव भी प्रकृति के साथ संवाद करने के लिए सदैव आतुर रहा है और अपनी मनोभिव्यक्ति के लिए उसकी ऐसी आवश्यकता की पूर्ति के लिए मेरे से ही उसे जिन शब्दों का उपहार मिलता है वो मैं ही हूँ यानि मैं हिंदी हूँ।

प्रकृति के सुकुमार कवि सुमित्रानदंन पंत जी ने अपनी बादल नामक कविता में ये उद्गार व्यक्त किए हैं :-

सुरपति के हम ही हैं अनुचर,
जगतप्राण के भी हैं सहचर,
मेघदूत की सजल कल्पना,
चातक के प्रिय जीवन धर।
जलाशयों में कमल दलों सा
हमें खिलाता नित दिनकर,
पर बालक सा वायु सकल दल,
बिखरा देता चुन सरवर ।।

कई बार जब प्रकृति अपनी मर्यादाओं की सीमाएं तोड़ती हैं, मानव जीवन अस्त व्यस्त त्रस्त हो उठता है, चहूँ ओर कराह आहें क्रन्दन, मानव के भीतर की व्यथा और आघात को प्रकट करती है। तब भी आप देखेंगे, अनुभूत करेंगे उस अमूर्त सघन पीड़ा को जो अभिव्यक्त करने का सामर्थ्य रखती है, उस निराकार वेदना को जो साकार बनाने का सामर्थ्य रखती है, वो मैं ही हूँ यानि मैं हिंदी हूँ, जैसे :-

कौन जगा रहा है लोगों के
दिलों से इस विश्वास को
सारी धरा को बेचकर तुम
खरीदो आकाश को
सागर की लहरें ये खबर
सुनकर कांपने लगी
कैसे जाकर वो बुझा सकती है
अन्तरिक्ष की प्यास को।

मर्यादाओं की सीमा रेखा का उल्लंघन केवल प्रकृति ही नहीं करती। इतिहास के पन्नों पर ऐसी असंख्य गाथाएं लिखी हुई हैं जिनमें मानवता के उत्पीड़न और मानव के शोषण, उसके अन्तस, भय, संघर्ष और अपनी अस्मिता के लिए बलिदानों के विलक्षण किस्से भरे हुए हैं। उन गाथाओं को और इतिहास में उन्हें अपना परिचय समाहित करने के लिए जिन शब्दों और वाक्य विन्यासों की आवश्यकता रही है उनकी पूर्ति मैंने ही की है। मैं उन्हे शब्दों के रत्न और मोती देती हूँ, जिनके आकर्षण में व्यक्ति अर्थात् पाठक बंध जाता है वो उपहार देने वाली मैं ही यानि मैं हिंदी हूँ। जैसे महाभारत के युद्ध पर कवि ने लिखा:-

बात छली गई जब
हर तरह से विश्वास की,
दुःखद कहानियाँ बन गई,
तब हमारे इतिहास की।
जिन आंखों ने लीला देखी थी,
तब विनाश की,
हाय तब छाती फटने लगी थी,
देखकर आकाश की।

(त्रिवेणी से उद्धृत)

जी हाँ, आकाश में उड़ने वाले बादल जब रुठ जाते हैं, नदियों की लहरें शिथिल हो जाती हैं, झील, कुएं, तालाब, बावड़ियाँ अपनी भी प्यास बुझाने का सामर्थ्य खो बैठती हैं, खेल खलिहान वीरान लगने लगते हैं। प्रकृति की ऐसी त्रासदी पर बार-बार सूने आकाश को निहारता किसान, सूखे हुए खेतों के संग-संग अपने पशुधन की पीड़ाओं से आतुर होने लगता है वो मेरे ही हैं, यानि मैं ही वो हिंदी हूँ। सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला ने अपनी "भिक्षुक" कविता में जिस व्यथा को चित्रित किया है, वो निम्न पक्तियों में समाहित है :-

वह आता...
दो टूक कलेजे के करता,
पछताता पथ पर आता।
पेट पीठ दोनों मिलकर हैं एक,
चल रहा लकुटिया टेक।
मुठ्ठी भर दाने को, भूख मिटाने को,
मुंह फटी पुरानी झोली को फैलाता।
दो टूक कलेजे के करता,
पछताता पथ पर आता।

मानव मन की व्यथा, प्रकृति का विनाश, अन्तरिक्ष में सितारों की हलचल । इन घटनाक्रमों के अमूर्त रुप को, संवेदनाओं को मूर्तरुप के सांचे में ढालने का प्रयास लेखक करते हैं और मैं उनकी साधना को पूर्ण रुपेण सफल बनाने में अपने शब्दों के रत्न या वाक्यों की अनेक मालाएं देती हूँ, जैसे :-

घुंघरूओं की खामोशी पर,
बेज़ान पायल हो गई
साज़ का जब तार टूटा,
स्वर लहरी घायल हो गई।
बिजलियों की फरियाद पर,
न कतरा बहाया बरसात ने,
इस ज़मीं की प्यासी हसरत
और पागल हो गई।।

(पंखुडियाँ से उधृत)

मैं ही वह हिंदी हूँ, जिसने इतिहास के विविध कालखण्डों में आत्माभिव्यक्ति के लिए कवियों, लेखकों, इतिहासकारों अथवा ग्रन्थकारों को मेरा सहयोग प्राप्त हुआ। बल्कि यह इस प्रकार है कि उन्होंने ही मेरी शक्ति, सौन्दर्य और उपयोगिता को बढ़ाया और निखारा। मैं भी हिमालय से निसृःत होने वाली कई धाराओं के बहने और फिर उन विविध धाराओं के एकीकरण के कारण विशाल गंगा का रूप धारण करना और फिर बहते हुए सागर में मिलकर सागर की लहरों को और प्राणवान बनाना, इसी घटनाक्रम के अनुरूप ही मेरा जीवन परिलक्षित होता है। भारत के भिन्न-भिन्न प्रान्तों में मेरी अनेकानेक धाराएं बहती हैं, जिनमें मेरी पहचान समाहित है। मेरी ये सहयोगिनी धाराएं विश्व के अनेकानेक देशों में मेरी

शुद्धि सम्मेलन का आयोजन

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा के अन्तर्गत बहुत वर्षों के पश्चात् एक शुद्धि सम्मेलन का आयोजन रविवार, दिनांक 5 अप्रैल 2015 को आर्य समाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली में होना निश्चित हुआ है। इस सम्मेलन के दो सत्र होंगे, पहला सत्र प्रातः 10 बजे से दोपहर 1 बजे तक, और दूसरा सत्र 2 बजे से सायं 5 बजे तक होगा। एक बजे से दो बजे के बीच भोजन की व्यवस्था रहेगी। पहले सत्र में 'शुद्धि' विषय पर जो महानुभाव अपने विचार रखना चाहेंगे उन्हें 5-10 मिनट का समय दिया जायेगा, इसके लिए आप अपने नाम भेजने की कृपा करें।

दूसरे सत्र में आर्य समाज, सनातन धर्म, विश्व हिन्दू परिषद, धर्म जागरण मंच, जैन समाज, सिक्ख समाज, बाल्मीकि समाज के प्रमुख नेतागण अपने-अपने विचार रखेंगे। इस शुद्धि सम्मेलन को और अधिक सफल बनाने के लिए आप अपने सुझाव भी भेज सकते हैं।

निवेदक :

नरेन्द्र मोहन वलेचा
महामंत्री

हरबंसलाल कोहली
(कार्यकारी प्रधान)

शुद्धि समाचार में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

thearyasamaj.org

पहचान को और मुखर करती हैं। मैं ही वो हिंदी हूँ, जिसमें राजस्थानी भाषा में मीरा के गीत हैं, ब्रज में सुर की भक्ति समाहित है और तुलसी की अवधी में। प्रभो राम की जीवन गाथा को विश्व के साहित्य का एक अनुपम उपहार मिला जिसे रामचरित मानस के नाम से सर्वत्र जाना जाता है। उपरोक्त रचनाकारों ने विशिष्ट पहचान दी।

वीरगाथा काल में मेरा शैशव और बचपन अठखेलियाँ करता रहा। हाँ, जहां आवश्यकता हुई वहाँ शौर्य, पराक्रम और समर्पण भी दिखाया। कविवर चन्दरबदाई की ये पक्तियाँ आज भी लक्ष्य को भेदती हुई वो शब्द बाण हैं जिसने सुल्तान का सीना चीर दिया था :–

"चार बांस, चौबीस गज,
उगुंल अष्ट प्रमाण
ता उपर सुल्तान है
मत चूकियो चौहान"।

भक्ति काल में मेरी आत्मा विश्व के परमरचयिता और सृजनहार के प्रति लालायित होकर अध्यात्म का प्रखर रूप निखारने लगी। इस काल में अध्यात्म के विविध स्तर पर अपने आराध्य को लेकर कई धाराएं बहीं। साकार और निराकार उपासना को अपनाकर रचनाकारों ने समाज की साहित्यिक और सांस्कृतिक निधि को बहुत विशाल बनाया। मीरा, सूर, तुलसी, बाबा नानक, जायसी, अब्दुल रहीम, खानखाना अमीर खुसरो, रसखान आदि ने तो साहित्य सृजन में अध्यात्म की बहुत ऊँची ऊचाइयों को छूआ।

श्रृंगार काल के कवियों ने प्रकृति और मानव के सौन्दर्य को ऐसा उकेरा जो कल्पनातीत है। संयोग, वियोग, विरह और मिलन के क्षणों के भीतर की आस प्यास, प्रतीक्षा, सुख और वेदना, प्यास और तृप्ति सभी भावों का सफलतापूर्व लेखकों और कवियों ने वर्णन किया। इस काल में चित्रकला भी ऐसे ही रंग में रंग गई।

भारत अर्थात् हिन्दुस्तान ने विदेशी शासन के समय दासता की कुण्ठा, पीड़ा, त्रासदी, अनाचार, अत्याचार, असमानता और अपमान की आघात करने वाली समस्त स्थितियों को झेला है और सहा है। लेकिन हिंदी साहित्य सेवियों ने इस कालखण्ड में अपनी रचनाओं में अन्याय और शोषण के विरुद्ध आवाज उठाई। मानव मन में राष्ट्रीय चेतना को झंकृत किया। भीतर के सोए मानव को जगाया और उसके असहाय भाव को दूर किया। राष्ट्र के नेताओं, प्रेणताओं, लेखकों, साहित्यकारों ने लक्ष्य को साधने, स्वतन्त्रता पाने के लिए देशवासियों के हृदय को परस्पर जोड़ने के लिए मुझे सेवा का अवसर प्रदान किया। राष्ट्र की अस्मिता के हर छोर पर देशवासी परस्पर जुड़े, मेरे मान, देश की आन, बान, शान सबके रक्षार्थ और संस्कृति की वृद्धि, अभिवृद्धि सबके हेतु जिन महापुरुषों ने अनुपम कार्य किए और मुझे आगे रखा उन दिव्य महापुरुषों में जो अग्रणी हैं, वो हैं – महर्षि दयानंद सरस्वती, मोहनदास करम चन्द गांधी, मदनमोहन मालवीय, वीर सावरकर, पुरुषोतम दास टण्डन, मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, रामधारी सिंह दिनकर, मुंशी प्रेमचन्द, स्वामी श्रद्धानन्द आदि अनेकानेक नाम हैं जो उल्लेखनीय और अविस्मरणीय हैं।

23 जनवरी 1945 में सिंगापुर में जब सुभाष चन्द्र बोस ने स्वदेश की स्वतन्त्रता के लिए देशवासियों को आह्वान किया और उनके शब्दों को सुनकर राष्ट्र का समस्त यौवन जाग उठा– "तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूँगा"। इन शब्दों को सुनकर भारतीय युवाओं का साहस, शौर्य समर्पण सागर की तरह उमड़ पड़ा था। विदेशी सत्ता की जड़ें हिल गईं। उन प्राणवान शब्दों में मैं ही विद्यमान थी, अर्थात् मैं ही वो हिंदी हूँ जिसमें अमर शब्द कहे गए।

अक्टूबर 1962 में जब चीन ने विश्वासघात कर मित्रता को छलते हुए भारत पर आक्रमण किया। तब कविवर प्रदीप की काव्य रचना को भारत रत्न से सम्मानित सुश्री लता मंगेशकर जी ने ऐसा स्वर प्रदान किया जिसे सुनकर तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरु संग सभी श्रोताओं की आंखों से गंगा जमुना की धारा बही थी। उस काव्य रचना के ये शब्द "ऐ मेरे वतन के लोगों जरा आंख में भर लो पानी, जो शहीद हुए हैं उनकी जरा याद करो करो कुर्बानी"। ये समस्त शब्दावली, ये काव्य पक्तियाँ मुझसे ही रची गई थीं, यानि मैं ही वो हिंदी हूँ।

14 दिसम्बर 1949 को संविधान सभा ने धारा 343 के अन्तर्गत मुझे राजभाषा के रूप में सम्मानित किया गया। लेकिन अपने मानस में जो विदेशी संस्कृति की दासता को ढो रहे थे, उन्होंने अनेकानेक बाधाएं खड़ी की। लेकिन वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र दामोदर मोदी जी ने संयुक्त राष्ट्र महासंघ में हिंदी में 27 सितम्बर 2014 को अभूतपूर्व भाषण के द्वारा मेरी गरिमा को, मान को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पहुंचा दिया। सभी हिंदी प्रेमियों की ओर से उनका धन्यवाद।

उन्मुक्त गगन में मन के पंछी,
मिलकर जब उड़ान भरें
चाँद सितारे भी संग मिलकर,
उन संग जय जय गान करें।
अखिल विश्व में बन्धुत्व भाव
को जो निरत गतिमान करे
जन–जन की वाणी हिंदी है,
आओ हिंदी का सम्मान करें।

(अन्तर्मन से उद्धृत)

लेखक – विजय गुप्त, 335, मदनगीर,
नई दिल्ली, फोन– 9313161393

स्वामी श्रद्धानन्द

–हरबंसलाल कोहली

1. तानसेन ने दीपक राग से दीपक जला दिया,
ऋषि दयानन्द ने यज्ञ वेदी पर दीप जलाना सिखा दिया,
विधर्मियों को वाणी से कराना परास्त, शास्त्रार्थ द्वारा बता दिया,
पण्डित लेखराम ने चलती गाड़ी से कूद, इक नया रास्ता दिखा दिया।

2. झूठे मुकद्दमे न लेना, ऐसा मुंशीराम था।
मांस कटोरी फेंक शाकाहारी बन जाना, ऐसा मुंशीराम था,
विधवा का पिता बन, कन्यादान करना, ऐसा मुंशीराम था,
ऋषि कृपा से नास्तिक का ईश्वर का विश्वासी बन जाना, ऐसा मुंशीराम था,
सर्वस्व अर्पण कर जीवन बिताना, ऐसा मुंशीराम था,
वकील से स्वयं सन्यासी बन जाना, ऐसा मुंशीराम था,
अपने बच्चों को गुरुकुल में प्रवेश कराना, ऐसा मुंशीराम था,
स्वधर्म प्रचारक का ऊर्दू छोड़ हिन्दी में छपवाना, ऐसा मुंशीराम था,
दलित उद्धार सभा, नीचे से दलित उठाना, ऐसा मुंशीराम था।

3. संगीनों के आगे सीना ताने, क्या ऐसा कोई कर सकता,
जामा मस्जिद से वेद मन्त्र उच्चारण, क्या ऐसा कोई कर सकता,
हम का अर्थ बताने वाला, क्या कोई और दम भर सकता,
शुद्धि आन्दोलन से गांधी तक को हिलाना, कोई और नहीं था कर सकता।

4. जिस गंगा पर दयानन्द ने पाखण्ड खण्डनी लहराई थी,
उसी तट पर श्रद्धानन्द ने गुरुकुल कांगड़ी बनाई थी,
तीस हजार जब तक न एकत्रित, मैं घर में न जाऊंगा,
बाहर ही रहना, बाहर ही सोना, बाहर ही खाना खाऊंगा।

5. सब से प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य व्यवहार, भगवान् कृष्ण को याद करो,
कांटे को पीसकर पीना, आचार्य चाणक्य को याद करो,
तीन सौ पण्डितों से शास्त्रार्थ, ऋषि दयानन्द को याद करो,
गुरुओं के थे जो गुरु, विरजानन्द को याद करो,
स्वराज प्राप्ति हेतू लाठियां खाना, लाजपत राय को याद करो,
माये रंग दे बसंती चोला, भगत सिंह को याद करो,
सुराज से स्वराज श्रेष्ठ, स्वामी दयानन्द को याद करो,
जय जवान जय किसान, लाल बहादुर को याद करो,
पिता पुत्रों का बलिदान, गुरु गोबिन्द सिंह को याद करो,
देश हित संन्यास को त्यागे, बन्दा बैरागी को याद करो,
संयुक्त राष्ट्र में हिन्दी का पहला भाषण, अटल बिहारी को याद करो,
संसार का उपकार है करना, तो आर्य समाज को याद करो।

6. मात्र भूमि, पित्रभूमि, पुण्य भूमि, वीर सावरकर को भूलो मत,
शुद्धि हिन्दू जाति का जीवन है, मदनमोहन मालवीय को भूलो मत,
चार लाख विधर्मी वैदिक धर्म में लाना, श्रद्धानन्द को भूलो मत,
लेडीज और जेण्टलमैन को ब्रदर्स और सिस्टर बताना,
विवेकानन्द को भूलो मत।

7. कृण्वन्तो विश्वमार्यम् पर आचरण तो शुद्धि को तेज करो,
माफी से नहीं पाप माफ, कर्म सिद्धान्त बताना तेज करो,
गौ हत्या को बन्द करना है, तो शुद्धि को तेज करो,
झूठे मतों पर विजय पाना है, तो शुद्धि को तेज करो,
बलात्कार घूसखोरी हटवानी है, तो दस नियमों का पालन करना होगा,
भारत हिन्दू देश रहे, तो शुद्धि का डंका बजाना होगा।

श्रद्धांजलि

श्रीमती पुष्पा देवी कपूर जी 88 वर्ष, की आयु में दिनांक 7 जनवरी 2015 को स्वर्गवास हो गया। आप आर्य समाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली का स्थापना समय की सदस्या थीं तथा आर्य समाज की उन्नति में उनका सराहनीय योगदान था। उनके निधन से आर्य परिवार का एक महत्वपूर्ण सदस्य चला गया। प्रभु उस पुण्य आत्मा को अपने चरणों में स्थान दे।

thearyasamaj.org

जिस कार्य-व्यवसाय को करने से हमें आध्यात्मिक संतुष्टि प्राप्त होती है, वही हमारा स्वधर्म है!

– डा0 जगदीश गांधी, शिक्षाविद् एवं संस्थापक–प्रबन्धक
सिटी मोन्टेसरी स्कूल, लखनऊ

(1) जिस कार्य–व्यवसाय को करने से हमें आध्यात्मिक संतुष्टि प्राप्त होती है, वही हमारा स्वधर्म है!

समाज में कुछ 'असाधारण' तथा बिरले लोग ही' ऋषि–मुनियों तथा महापुरूषों के रूप में विकसित हुए हैं जिन्होंने अपनी आत्मा के विकास के लिए कोई 'नौकरी या व्यवसाय' नहीं किया। इन महापुरूषों ने पर्वतों, कन्धराओं, गुफाओं तथा घास–फूस की झोपड़ियों या साधारण परिस्थितियो में रहकर तथा समाज में अत्यन्त सादा एवं सरल जीवन जीकर और व्यापक 'समाज के लिए उपयोगी बनकर' समाज की महती सेवा की और इस प्रकार अपनी आत्मा का विकास किया। किन्तु 'साधारण व्यक्ति' केवल मजदूरी, किसानी, नौकरी, उद्योग या व्यवसाय के द्वारा समाज के सुचारु रुप से संचालन में तथा उसके विकास में योगदान कर व 'समाज के लिए उपयोगी बनकर' ही अपनी आत्मा का विकास कर सकता है। इस तरह हमें जिस कार्य–व्यवसाय को करने से आध्यात्मिक संतुष्टि प्राप्त होती है, वही हमारा स्वधर्म है। इसके अतिरिक्त आध्यात्मिक संतुष्टि का अन्य कोई उपाय नहीं है।

(2) यदि व्यक्ति नौकरी या व्यवसाय न करें तो अपनी आत्मा का विकास कैसे करें?

यदि व्यक्ति नौकरी या व्यवसाय के द्वारा अपनी आजीविका नहीं कमायेगा तो अपने परिवार का भरण–पोषण कैसे करेगा? अपनी स्वयं की कमाई न होने की स्थिति में व्यक्ति या तो भीख मांगेगा या दूसरों की कमाई खायेगा, या चोरी बेईमानी की रोटी खायेगा या आत्महत्या कर लेगा। यह सब पाप है। ऐसी कोई नौकरी या व्यवसाय नहीं करना चाहिए जो आत्मा के विकास में बाधक हों। अतः ईमानदारी और परिश्रम से नौकरी या व्यवसाय करके 'समाज के लिये उपयोगी बनना' ही आत्मा के विकास तथा आध्यात्मिक संतुष्टि का एकमात्र उपाय है। बच्चों को ऐसी शिक्षा दें जिससे कि वे सशक्त समाज के निर्माण व विकास में अपना योगदान कर सकें।

(3) क्या हम नौकरी या व्यवसाय करते हुए ही आत्मा का भी विकास कर सकते है?

प्रत्येक व्यक्ति को अपनी आजीविका ईमानदारी से कमाने के लिए कोई न कोई छोटे से छोटा या बड़ा अपना उद्योग, व्यवसाय, नौकरी या मेहनत मजदूरी करना, अखबार बेचना, जूतों में पालिश करना, ठेला लगाना, कुली का कार्य करना, कमजोर बच्चों को ट्यूशन पढ़ाना, रिक्शा चलाना आदि–आदि कोई न कोई कार्य अवश्य करना चाहिये। दूसरों की कमाई खाने या झूठ और पाप की कमाई खाने से हमारी आत्मा कमजोर होती है। जबकि छोटे से छोटा परिश्रम व ईमानदारी से कमाया हुआ एक पैसा भी हमारी आत्मा के विकास तथा आध्यात्मिक संतुष्टि में सहायक होता है।

(4) क्या नौकरी द्वारा आजीविका कमाना परमात्मा द्वारा निर्मित समाज की सेवा का साधन हैं?

अनेक लोग पवित्र सेवा भावना से सरकारी, प्राइवेट या समाज सेवी संस्थाओं में नौकरियाँ करते हैं या किसानी, मेहनत–मजदूरी का कोई कार्य करते हैं। जैसे– खेतीबाड़ी, शिक्षा, न्यायिक, प्रशासनिक, सफाई, यातायात, मीडिया, चिकित्सा, रेलवे, पुलिस, सेना, बैकिंग, जल संस्थान, बिजली, सड़क, निर्माण आदि विभागों में कार्यरत रहते हुए जनता को अनेक प्रकार की जन सुविधायें उपलब्ध कराते हैं और समाज का संचालन एवं सुचारु व्यवस्था बनाने में अपना योगदान करते हैं। किन्तु जो व्यक्ति अपने कार्यों को जनहित की पवित्र सेवाभावना से न करके निपट अपनी आजीविका कमाने की भावना से करते हैं वे स्वयं ही अपनी आत्मा का विनाश कर लेते हैं।

(5) क्या उद्योग या व्यवसाय द्वारा आजीविका कमाना समाज की सेवा तथा आध्यात्मिक संतुष्टि का साधन है?

एक उद्योगपति पवित्र मन से समाज के लिये उपयोगी वस्तुओं जैसे कपड़े का निर्माण करके या एक व्यवसायी आम लोगों को दैनिक उपयोग की वस्तुऐं जैसे जनरल मर्चेन्ट, दवाइयाँ स्टेशनरी आदि को जहाँ बनती है वहाँ से एकत्रित करके उनके निवास के आसपास उपलब्ध कराके जन सुविधायें प्रदान करते हैं। उदाहरण के लिए एक छोटी सी किराने की दुकान करने वाला अन्य अनेक सामानों के साथ एक छोटी सी सुई भी अपनी दुकान में रखता है। यदि वह ऐसा न करता तो हमें एक सुई को भी खरीदने के लिए अपने नगर से काफी दूर स्थित दूसरे नगर में जहाँ सुई की फैक्टरी स्थित है वहाँ जाना पड़ता। यदि फैक्ट्री कपड़ा न बनाये तो समाज की क्या स्थिति होगी?

(6) क्या नौकरी या व्यवसाय द्वारा आजीविका कमाने वाले सम्मान के पात्र हैं?

परिश्रम, ईमानदारी व जनसेवा की भावना से मजदूरी, मेहनत, नौकरी, व्यवसाय या उद्योगों के द्वारा आजीविका कमाने वाले व्यक्ति समाज के सुचारु रुप से संचालन में व इसकी व्यवस्था बनाने में तथा इसके विकास में सहायक हैं। अतः ऐसे सभी व्यक्ति समाज के लिये श्रद्धा एवं सम्मान के पात्र हैं! अन्य कोई नहीं।

(7) मनुष्य ऊहापोह, अनिश्चय एवं संशय की स्थिति में क्यों है?

आज मनुष्य ऊहापोह, अनिश्चय एवं संशय की स्थिति में रह रहा है। और निरन्तर यह प्रश्न हर व्यक्ति को अंदर से सदैव परेशान करता रहता है कि क्या नौकरी, उद्योग या व्यवसाय हमारी आत्मा के विकास में सहायक है या बाधक है?परमात्मा ने मनुष्य को स्वतंत्र इच्छा शक्ति दी है। वह चाहे तो प्रभु की प्रसन्नता के हेतु जन सेवा के पवित्र उद्देश्य से अपनी आजीविका का उपार्जन मजदूरी, किसानी, नौकरी उद्योग या व्यवसाय के द्वारा करके 'अपनी आत्मा का विकास करले' या फिर चाहे तो 'जनसेवा की पवित्र भावना से रहित' केवल अपनी आजीविका कमाने के लिए मजदूरी, किसानी, नौकरी या व्यवसाय करके अपनी आत्मा का विनाश कर ले?

(8) अपनी आत्मा के विकास के लिए क्या करें?

क्या नौकरी, उद्योग धंधे या व्यवसाय जैसे भी चलता हो वैसे ही चलने दें। तथापि यदि उसमें कामचोरी, भ्रष्टाचार, रिश्तखोरी, मिलावट, असावधानी, पाप और अपराध भी करना पड़े तो क्या उसे करते रहें और आत्मा के विकास के लिए और कुछ करें?जैसे – भजन–कीर्तन करना, यज्ञ–हवन करना, गंगा में डुबकी लगाना, तीर्थ करने जाना, कुछ पंडितों को हर साल भोजन कराना आदि–आदि। केवल पवित्र मानव सेवा की भावना से जो कार्य किया जाता हैं उससे ही आत्मा का विकास तथा आध्यात्मिक संतुष्टि प्राप्त होती है न कि किसी भी अन्य तरीके से।

(9) मनुष्य को 'विचारवान योनि' कब मिलती है?

केवल मनुष्य ही अपनी आत्मा का विकास कर सकता है पशु नहीं। हिन्दू शास्त्रों के अनुसार परमात्मा ने दो प्रकार की योनियाँ बनाई हैं। पहली मनुष्य की योनि एवं दूसरी पशु योनि। चौरासी लाख ''विचार रहित पशु योनियों'' में जन्म लेने के पश्चात ही परमात्मा कृपा करके मनुष्य को ''विचारवान मानव की योनि'' देता है। इस मानव जीवन की योनि में मनुष्य या तो अपनी विचारवान बुद्धि का उपयोग करके व नौकरी या व्यवसाय के द्वारा या तो अपनी आत्मा को पवित्र बनाकर परमात्मा से निकटता प्राप्त कर ले अन्यथा उसे पुनः चौरासी लाख पशु योनियों में जन्म लेना पड़ता हैं। इसी क्रम में बार–बार मानव जन्म मिलने पर भी मनुष्य जब तक अपनी 'विचारवान बुद्धि' के द्वारा अपनी आत्मा को स्वयं पवित्र नहीं बनाता तब तक उसे बार–बार 84 लाख पशु योनियों में ही जन्म लेना पड़ता हैं। और यह क्रम अनन्त काल तक निरन्तर चलता रहता हैं।

(10) क्या अमेरिका के राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन राजनीति में रहते हुए अपनी आत्मा का विकास कर सकें?

अमेरिका के राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन को जब कोई भी नौकरी नहीं मिली तो उन्होंने नाव चलाकर, जूतों पर पालिश करके एवं अखबार बेचकर व रद्दी की दुकान पर नौकरी करके ईमानदारी से अपनी आजीविका कमाई और अपनी आत्मा को विकसित किया। ईमानदारी और अति कठोर परिश्रम से अपनी आजीविका कमाते हुए समाज सेवा के अति महत्वपूर्ण कार्य करके अमेरिका जैसे बड़े देश के सर्वोच्च राष्ट्रपति के पद पर आसीन हुए और गुलामी प्रथा को समूल नष्ट किया, अमेरिका से काले–गोरे व्यक्तियों के भेदभाव को समाप्त किया और सारे संसार में जनतन्त्र स्थापित किया। आइये, अपनी आत्मा के विकास के लिये हम भी पवित्र मन से उपयोगी बनें।

(11) साधारण व्यवसायी 'रैदास' मोची के कार्य के द्वारा संत रैदास कैसे बन गये?

आप देखें, संत रैदास कभी मंदिर–मस्जिद गिरजे–गुरुद्वारे नहीं जाते थे और न पूजा–पाठ करते थे। रैदास जूते बनाकर अपनी आजीविका चलाने वाले एक व्यवसायी थे। पूरे मनोयोग एवं अति परिश्रम से जूते बनाते समय उनकी भावना यह रहती थी कि जो भी उनका जूता खरीदे, उसे जूता पहनकर किसी भी प्रकार की तकलीफ न हो तथा जूता आरामदेय हो। साथ ही उनका बनाया जूता टिकाऊ हो ताकि ग्राहक को बार–बार पैसा न खर्च करना पड़े। रैदास जूता में आयी लागत में अपना उचित लाभ जोड़कर उसे एक दाम में बेचा करते थे। उनकी इस पवित्र भावना के कारण ही स्वयं भगवान की कृपा से उन्हें संत रैदास की उपाधि मिली।

(12) जुलाहे कबीर मानवता के मार्गदर्शक संत कबीर कैसे बन गये?

कबीर एक जुलाहे थे। वह अपनी आजीविका कमाने के लिए कपड़ा बुनने का कार्य बड़ी ही लगन तथा सेवा भाव से करते थे। कबीर अपने जुलाहे के कार्य को पूरी लगन, मेहनत और तन्मयता से करते थे तथापि उनकी दृष्टि चादर बुनते समय इस बात पर रहती थी कि चादर में लगने वाला एक भी धागा कमजोर न हो तथा वह बीच से टूटने न पाये ताकि चादर बहुत मजबूत बने और वह चादर जल्दी न फटे और जो ग्राहक उसे खरीदकर ले जाये उसके यहाँ वह चादर बहुत दिन चले और ग्राहक को बार–बार पैसे न खर्च करने पड़े। उन्होंने अपने व्यवसाय के द्वारा ही आत्मा का विकास किया और संत कहलाये।

(13) डा0 राधाकृष्णन ने शिक्षक की नौकरी के द्वारा अपनी आत्मा का विकास कैसे किया?

राष्ट्रपति डा0 राधाकृष्णन एक शिक्षक की नौकरी करके अपनी आजीविका कमाते थे। उन्होंने एक आदर्श शिक्षक का आचरण करते हुए अपनी आत्मा का विकास किया। वह पूरे मनोयोग से बहुत दिल लगाकर अपने विषय को विद्यार्थियों को पढ़ाते थे तथा विषय की अच्छी पढ़ाई के साथ ही साथ विद्यार्थियों को आध्यात्मिक शिक्षा भी देते थे। इस कारण वे अपने विद्यार्थियों के बीच अत्यन्त लोकप्रिय शिक्षक बन गये। उन्होंने अपनी नौकरी के द्वारा ही अपनी आत्मा का विकास किया।

(14) समाज विरोधी व्यवसाय करने से क्या हमारी आत्मा का विनाश होता है?

हाँ! व्यापार से नहीं वरन् अधिक से अधिक लाभ कमाने की नियत से, नकली को असली वस्तु बताकर बेचने से तथा मिलावट करने और कम तौलकर देने और उसके पूरे दाम वसूलने से आत्मा कमजोर होती है। यदि हम व्यापार के नाम पर जुआ–सट्टा खिलायें, गंदे सिनेमा बनायें, वैश्या वृत्ति को बढ़ावा दें, शराब बनाने का धन्धा करें तो इस तरह के मानव अहित के एवं समाज विरोधी व्यवसाय करने से हमारी आत्मा का विनाश होता है। ईमानदारी तथा सेवाभाव से की गई लोक हितकर नौकरी या व्यवसाय के अलावा आत्मा के विकास तथा आध्यात्मिक संतुष्टि का और कोई उपाय नहीं है। यही हमारा स्वधर्म है।

thearyasamaj.org

इस विलासिता के माहौल में यशोदा बेन, है एक तपस्विनी पतिव्रता

मेरा प्यारा देश भारत का इतिहास पतिव्रता माताओं से भरा पड़ा है। इस देश में सदैव नारियों ने अपने पति के दुःख–सुख का अधिक ध्यान रखा और अपने गृहस्थ को सुचारु रूप से चलाते हुए पति की सेवा में अत्यधिक ध्यान रख कर केवल अपने परिवार का ही गौरव नहीं बढ़ाया बल्कि अपने समाज व राष्ट्र का गौरव भी बढ़ाया। उनका जीवन इतना उत्तम पवित्र होता था, जिसकी धवल कीर्त्ति इतनी अधिक बिखरी हुई रहती थी जिसकी उपमा के लिए चन्द्रमा भी फीका पड़ जाता था।

सतयुग व त्रैतायुग में मुख्य–मुख्य पतिव्रताओं में माता सीता, सावित्री, अनसुय्या, दमयन्ती, तारा, मन्दोदरी, सुलोचना, उर्मिला के नाम विशेष रूप से लिए जाते हैं। द्वापर में माता गान्धारी जिसका पति धृतराष्ट्र अन्धा था, उसने यह सोचकर कि जब तेरा पति ही अन्धा है तो तुम्हें देखने का कोई अधिकार नहीं। इसीलिए उसने अपने भी जीवन भर आँखों पे पट्टी बान्धे रखी और पति की पूरी सेवा करते हुए गृहस्थ को सुचारु रूप से चलाया।

कलयुग में एक महान क्रान्तिकारी भाई बालमुकन्द जो भाई परमानन्द का चचेरा भाई था, वह सन् 1912 में हुए लार्ड हार्डिंग बाइसराय पर चान्दनी चौक दिल्ली में हुए बम काण्ड में दोषी के रूप में पकड़ा गया और जेल में बन्द कर दिया गया। उसकी धर्म पत्नी जो सच्ची पतिव्रता थी, उसका नाम रामरखी था, वह एक दिन अपने पति से जेल में मिलने गई। उस समय भाई बालमुकन्द रोटी खा रहे थे। पत्नी ने पूछा रोटी कैसी है, तब पति ने कहा कि आधी मिट्टी मिली हुई कच्ची व रुखी रोटी है। रामरखी को बड़ा दुःख हुआ और उसने वहीं पर प्रतिज्ञा कर ली कि मैं भी ऐसी ही रोटी खाऊँगी। जब मेरा पति देव ऐसी रोटी खाता है तो मुझे अच्छी रोटी खाना मेरा पतिधर्म इज़ाजत नहीं देता है और घर पर आते ही रामरखी वैसी ही रोटी बनाकर खाने लगी। फिर जब दुबारा अपने पति से मिलने गई तब उसका पति एक छोटी कोठड़ी में अन्धेरे में ही मच्छरों के बीच सोया हुआ था। जब उसने अपने पति को इस दुर्दशा में देखा तो उसे बड़ा दुःख हुआ और अपने निश्चय के अनुसार अपने घर पर आते ही, अपने घर से कुछ दूर एक छोटी कोठड़ी बनवाकर, उसी में अन्धेरे में मच्छरों के बीच सोने लगी। सन् 1915 में जब भाई बालमुकन्द को उनके तीन महान् क्रान्तिकारी साथी जिनके नाम थे मास्टर अमीर चन्द, श्री अवध बिहारी तथा श्री बसन्त विश्वास के साथ फाँसी दी गई। जब रामरखी ने यह सुना कि तुम्हारे पतिदेव को फाँसी हो गई तब उसने भी खाना–पीना छोड़ दिया और कुछ ही दिनों बाद वह भी उस महान् क्रान्तिकारी की महान् पतिव्रता धर्म पत्नी, इस नश्वर शरीर को छोड़ कर मोक्ष धाम को सिधार गई।

अब मैं एक ऐसी पतिव्रता कुशल गृहणी का परिचय दूँगा जिसको बहुत कम लोग जानते हैं, जिसने अपने व्यवहार से बिगड़ेल पति को एक महान् देशभक्त व सच्चा सन्यासी बना दिया। यह पतिव्रता नारी है स्वामी श्रद्धानन्द की धर्म पत्नी जिसका नाम है "शिवा देवी" और पति का बचपन का नाम था मुन्शीराम। मुन्शीराम एक कोतवाल का लड़का होने से छोटे पन में ही बुरी संगत में पड़ गया।

वह अपने साथियों के साथ गन्दे स्थानों पर जाकर शराब पीकर रात्रि के दो बजे घर पर आता था। उसकी पत्नी दो बजे तक उसकी राह देखती रहती थी और जब मुन्शीराम शराब पीकर बेहोश की स्थिति में घर आता था, तो आते ही उल्टी करना आरम्भ कर देता था, तब उसकी धर्म पत्नी शिवा देवी पानी से उसके गन्दे कपड़े साफ करती थी और उसका मुँह साफ करके पंखा झुला कर सुला देती थी। एक दिन ऐसे ही मुन्शीराम घर पर आया और उसकी पत्नी ने उसके कपड़े तथा मुँह धो कर उसको सुला दिया और पंख करने लगी। एक घण्टे बाद उसकी आँख खुली और भोजन मांगा। पत्नी, उसे अच्छी प्रकार भोजन बना खिलाने लगी। भोजन करते समय मुन्शीराम ने अपनी पत्नी से पूछा कि हे शिवे! तुमने तो भोजन कर लिया होगा। तब पत्नी के कहा "पतिदेव मैं आप से पहले भोजन कैसे कर सकती हूँ। जैसे ही देवी ने यह कहा कि मुन्शीराम का हृदय पिघल गया और आँखों से प्रायश्चित की अश्रुधारा बह निकली कहा, देवी! मैं बड़ा अन्यायी हूँ! तुम भूखी रहती हो, यह मुझे पता भी नहीं था। आज से मैं सभी बुरी आदतें छोड़ता हूँ और आगे हम दोनों साथ–साथ समय पर भोजन किया करेंगे।

यही मुन्शीराम बाद में महात्मा मुन्शीराम बना और फिर देश का महान् क्रान्तिकारी सन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द बना जिसने 2 मार्च 1902 को हरिद्वार के समीप गंगा के तट पर विरान जंगल में गुरुकुल काँगड़ी खोला। जिसमें सेंकड़ों स्नातक पढ़ कर देश व समाज की सेवा की। पन्द्रह साल गुरुकुल काँगड़ी की तन, मन, धन से सेवा करके 10 अप्रैल 1917 में सन्यास लेकर स्वामी श्रद्धानन्द बना। 30 मार्च सन् 1919 को दिल्ली के चाँदनी चौक बाजार में रोयल एक्ट के विरोध में एक जुलूस का नेतृत्व करते हुए गोरों की सेना के सामने छाती खोलकर गोली मारने को कहा। अंग्रेजी सेना ने अपनी बन्दूकें नीची कर लीं और जुलूस आगे बढ़ गया। सन् 1919 में जलियावाला काण्ड से पंजाब में बड़ा भय बैठा हुआ था। ऐसी स्थिति में कांग्रेस ने अमृतसर में अधिवेशन करने का विचार कर लिया। स्वामी श्रद्धानन्द ने इस अधिवेशन का स्वागताध्यक्ष बनकर अधिवेशन को सफल बनाया, जिसकी प्रशंसा सभी कांग्रेसियों ने की। मुस्लिम नव युवकों के आग्रह पर 4 अप्रैल 1925 को जामा मस्जिद की मिनार पर बैठ कर वेद–मन्त्र का पाठ करके शुद्धि का काम करने लगे। शुद्धि के काम से कुछ मुस्लिम भाई नाराज हो गये और 23 दिसम्बर 1926 को एक मुस्लिम नवयुवक जिसका नाम अब्दुल रसीद था उसने गोली मार कर स्वामी श्रद्धानन्द की हत्या कर दी। स्वामी जी ने अपनी जीवनी "कल्याण मार्ग का पथिक" में स्वयं ने लिखा है कि मेरे जीवन को सुधारने में पहला हाथ" महर्षि दयानन्द का है और दूसरा हाथ मेरी धर्म पत्नी "शिवा देवी" का है। मैं इन दोनों का सदा ऋणी रहूँगा।

अब मैं एक ऐसी परमत्यागी, पतिव्रता की चर्चा करुँगा। जिसका नाम यशोदा बेन है और अपने देश के प्रधान मन्त्री नरेन्द्र मोदी की धर्म पत्नी है। इसका त्याग, सन्तोष, धैर्य, तथा पतिव्रत धर्म के प्रति समर्पित भाव केवल सराहनीय ही नहीं बल्कि अनुकरणीय भी है। समाचारों के अनुसार ऐसा जान पड़ता है कि इसका कभी भी अपने पति नरेन्द्र मोदी से एक साथ रहना–सहना नहीं हुआ। मोदी जी बचपन से ही बैरागी स्वभाव के व पक्के राष्ट्रवादी व्यक्ति थे। मोदी जी कई मठों व मन्दिरों में जाकर साधु बनने की कोशिश भी की और हिमालय की तराईयों में भी साधु सन्तों के दर्शनों के लिए काफी दिनों तक घूमा परन्तु संयोग नही बैठा। फिर मोदी जी आर.एस.एस. से जुड़ गये और उसी में अधिकतर समय बिताने लगे बाद में राजनीति में आ गये, और बारह वर्ष तक गुजरात के सफल मुख्य–मन्त्री बने रहकर अब देश के प्रधान मन्त्री बने हुए हैं और देश को नई दिशा देने का केवल भरसक प्रयत्न ही नहीं कर रहे बल्कि निश्चित ही देश की उन्नति व विकास करेंगे जिससे विश्व की सब से बड़ी शक्ति बनाकर देश के गौरव व सम्मान को बढ़ावेंगे। ऐसी सभी देश वासियों को आशा है।

यह एक प्रसन्नता की बात है और यशोदा बेन को गृहस्थ का सुख न मिलने पर भी वह अपने आप को मोदी जी की धर्म पत्नी बनी रहने में ही अपना गौरव समझती है और उसकी खुशी और दीर्घआयु के लिए हर किस्म का प्रयत्न यानि उपवास, तीर्थ यात्रा आदि करती रहती है। इससे बढ़ कर और कौन पतिव्रता हो सकती है, जो गृहस्थ के सुख की की कामना न रखते हुए भी अपने पति में पूर्ण रूप से श्रद्धा का भाव रखती हो और उसके सुखी जीवन की अभिलाषा रखती हो। मैं ऐसी त्यागी, तपस्विनी और मोदी जी के प्रति समर्पित भाव रखने वाली यशोदा बेन का अपने हृदय से स्वागत करता हूँ और इस तपस्विनी को नमन करते हुए, मैं अपनी लेखनी को विराम देता हूँ।

–खुशहाल चन्द्र आर्य
कोलकता,
फोन 22183825,
64505013

thearyasamaj.org

वसन्त पञ्चमी एवं सरस्वती पूजा का वैज्ञानिक स्वरूप

डा. अनुला मौर्य
(प्राचार्या, कालिन्दी महाविद्यालय, दिल्ली)

ओ३म् पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती। यज्ञं वष्टु धियावसु।

माघ शुक्ल पञ्चमी को वसन्त पञ्चमी का महोत्सव मनाया जाता है। वसन्त पञ्चमी वसन्त आगमन की अभिनन्दन तिथि है। प्राचीन काल से इस महोत्सव को धूमधाम के साथ मनाया जाता है। शिशिर ऋतु परम कष्टदायिनी ऋतु है। इस ऋतु में मनुष्य और पशु–पक्षी तो दूर वृक्ष, लता सरोवर आदि की प्राकृतिक शोभा भी क्षीण हो जाती है सभी कष्टपूर्ण जीवन व्यतीत करते हैं, परन्तु वसन्त आगमन के साथ सभी प्रसन्नता अनुभव करते हैं। इसे श्री पञ्चमी भी कहते हैं। वसन्त पञ्चमी वसन्त ऋतु से 40 दिन पहले आता है। वसन्त का चारुतर वर्णन महाकवि कालिदास ऋतुसंहार में करते हैं–

द्रुमाः सपुष्पाः सलिलं सपद्ममम्, स्त्रियः सकामाः पवनः सुगन्धिः। सुखाः प्रदोषा दिवसाश्च रम्याः, सर्वं प्रिये! चारुतरं वसन्ते।।

वसन्त का वर्णन भी कवि शब्दों में –

नभः प्रसन्न सलितं प्रसन्नं
निशा प्रसन्ना बिमलेन्दुरम्या।
अहो वसन्ते विततता वसन्ति
प्रसादलक्ष्मी प्रतिवस्तुभाति।

भारत कृषि प्रधान देश है। भारत के कृषक अपने अहर्निश के परिश्रम को आसन्न आषाढ़ी उपज शस्य के रूप में सफल देखकर फूले अंग नहीं समाते। उनके गेहूँ, जौ, सरसों आदि के खेतों की नवाविर्भूत बालों से युक्त लहलहाती हरियाली उनकी आँखों को तरावट और चित्त को अपूर्व आनन्द देती है। कृषि के सब कार्य इस समय समाप्त हो जाते हैं। अतः कृषि प्रधान भारतीयों को इस समय आमोद–प्रमोद और राग–रंग की सूझती है। अतः कई प्रदेशों में आज के दिन नवान्न, नवशस्येष्टि, नवान्नप्राशान्न उत्सव के रूप में भी मनाया जाता है। लोग वसन्त पञ्चमी के दिन से होली की तैयारी शुरू कर देते हैं। होली एकत्र करते हैं। वसन्त का स्वागत के लिए प्रकृति भी अपना समारोह आरम्भ कर देती है। भारतीय प्रकृति प्रेमी हैं। जब प्रकृति देवी ही सर्वतोभावेन ऋतुनायक के स्वागत में तन्मय है, तो उसी के पंचभूतों से बना हुआ रसिक शिरोमणि मनुष्य रसवन्त वसन्त के शुभागमन से किस प्रकार बहिर्मुख रह सकता है। इसे **मदनोत्सव** के रूप में भी मनाया जाता है। संस्कृत साहित्य के दो प्रमुख नाटक **मालविकाग्निमित्रम्** एवं **रत्नावली** इस **वसन्तोत्सव** के उपलक्ष्य में अभिनीत हुए थे। अभिज्ञान शाकुन्तलम् के छठे अंक में भी वसन्तोत्सव की सूचना मिलती है। ऐतिहासिक दृष्टि से आज के दिन **वीर बालक हकीकतराय का बलिदान** हुआ था। वस्तुतः वसन्त जीवन के आनन्द का उत्सव है–

दुःखद दूर हुआ हिम त्रास है
सुखद आगत श्री मधुमास है।
अब कहीं दुःख का न निवास है,
सब कहीं बस हास विलास है।

आयुर्वेदीय दृष्टिकोण से बताया गया है कि इस ऋतु में कफ पिघलकर कुपित होता है, जठराग्नी मन्द होने लगती है एवं कफ सम्बन्धी रोगों की बृद्धि होने लगती है। अतः भावप्रकाश निघण्टुकार लिखते हैं–

मिष्टमम्लं दधि स्निग्धं दिवास्वप्नं च दुर्जरम्। अवश्यायमपि प्राज्ञो वसन्ते परिवर्जयेत्। अर्थात् बुद्धिमान व्यक्ति को मीठे, खट्टे, चिकनाई युक्त पदार्थ तथा गरिष्ठ भोजन तथा दिन में शयन का त्याग कर देना चाहिए।

सरस्वती पूजा :–

वेदों में सरस्वतीः–

चारों वेदों में सौ से अधिक मन्त्र हैं, जिनमें सरस्वती शब्द आया हुआ है। वेद में सरस्वती मुख्यरूप से चार अर्थों में एक–विज्ञान दाता परमेश्वर, दूसरी विदुषी विज्ञानवती स्त्री, तीसरे–सरस्वती नदी, चौथा वाणी के रूप में प्रयुक्त है। वेद मन्त्रों में सरस्वती का स्वरूप विद्यादात्री, विज्ञानवती, वाग्देवी, सर्वकामनातृप्ता, कल्याणीमाता, ऐश्वर्यदात्री, घृतपदी, वेदमाता, निःश्रेयस् दात्री, विज्ञानदात्री, आनन्दमयी, बुद्धिप्रेरिका के रूप में उल्लेख मिलता है।

पौराणिक मान्यता के अनुसार–

वसन्त पञ्चमी के दिन सरस्वती का जन्म हुआ था। सरस्वती को ब्रह्मा जी की पत्नी के रूप में वर्णन किया गया है। वसन्त पञ्चमी के दिन महाशक्ति माता सरस्वती की पूजा की जाती है। प्राचीन समय वैदिक अध्ययन का सत्र श्रावणी पूर्णिमा (उपाकर्म) से प्रारम्भ होकर इसी तिथि को समाप्त (उत्सर्जन) होता था। इसी दिन सरस्वती पूजन करना इसी स्मारक का अवशेष है।

माता सरस्वती वाणी और विद्या की अधिष्ठात्री देवी है। वेदों में **सरस्वती (वाणी) के 57 नाम है** श्लोकः, धारा, इडा, गौः, गौरी, गान्धर्वी, गभीरा, गम्भीरा, मन्द्रा, मन्द्राजनी, वाशी, वाणी, वाणीची, वाणः, भारती, धमनिः, नाडी, मेना, सूर्या, सरस्वती, निवित्, स्वाहा, वग्नुः, उपब्दिः, मायुः, काकुत्, जिह्वा, षोषः, स्वरः, शब्दः, स्वनः, ऋक्, होत्रा, गीः, गाथा, गणः, धेना, ग्नाः, विपा, ननना, कशा, धिषणा, नौः, अक्षरम्, मही, अदितिः, शची, वाक्, अनुष्टुप्, धेनुः, वल्गुः, गल्दा, सरः, सुपर्णी और बेकुरा। ये नाम सरस्वती जी के अनन्त गुण, कर्म आदि विशेषता को दर्शाते हैं। सरस्वती (विद्या) हम सबकी माता है और **"न मातु परं दैवतम्"** अर्थात् माता से बढ़कर दुनियाँ में और कोई बड़ा देवता नहीं होता।

सरस्वती के प्रत्येक तत्त्व का वैज्ञानिक महत्त्व ही मनुष्यों के जीवन के लिए हैं वे सभी तत्त्व अत्यन्त उपादेय हैं। जैसे

चार हाथ – वे चारों दिशाओं के प्रतीक हैं।

सफेद वस्त्र – स्वच्छ सफेद वस्त्र धारण करती हैं, जो कि सात्विकता का प्रतीक है।

पीला रंग – यह जिज्ञासा का प्रतीक है।

हसंवाहिनी हैं – हंस नीर–क्षीर विवेक का प्रतीक है।

पुस्तक – (चारों वेद) ज्ञान के प्रतीक हैं।

स्फटिकमाला – स्पष्टता का प्रतीक है। जीवन में स्पष्टता होनी चाहिए। जीवन को उलझनों में नहीं रखना चाहिए।

कमण्डलु – यह संग्रह का प्रतीक है। निरन्तर अच्छाई का, विद्या का, धर्म का एवं तप का संग्रह करते रहना चाहिए।

कमलपुष्प – निर्लिप्तता एवं निर्मलता का प्रतीक है। पंक में रहते हुए भी पंकज (कमल) कीचड़ से अलग रहता है। उसी प्रकार काम, क्रोध आदि विषय–विकारों से दूर होकर दुनियाँ में कमल पुष्प के समान रहना चाहिए।

वीणा – यह जीवन का प्रतीक है। जैसे वीणा के तारों को ज्यादा ढीला छोड़ दिया जाये तो संगीत सुनाई नहीं देता एवं तारों को ज्यादा कस देने पर भी आवाज नहीं आती। ऐसे ही जीवन रूपी वीणा में भी सदैव सन्तुलन रहना चाहिए। यह वीणा हमारे जीवन का प्रायोगिक (व्यावहारिक) ज्ञान का भी प्रतीक है। अर्थात् हम मन, वचन एवं कर्म से सदैव एक रहे।

इसी प्रकार सरस्वती में ज्ञान + कर्म एवं + भक्ति तीनों का समन्वय है। जैसे प्रयाग में सरस्वती नदी को लुप्त मानते हैं ऐसे ही हमारे शरीर में सुषुम्ना नाड़ी सरस्वती है। तीन विशेष नाड़िया इडा, पिंगला एवं सुषुम्ना हैं। सुषुम्ना को योगीजन ही जान पाते हैं क्योंकि वे गहराई में उतरकर परमात्मा का साक्षात्कार करते हैं। वैसे ही जो भी व्यक्ति ज्ञान की गहराई में उतरेगा उसे सरस्वती का प्रसाद मिलेगा। जैसे कविकुल गुरु कालिदास, सन्तकवि तुलसीदास जैसे कवियों को सरस्वती की कृपा प्राप्त हुई थी। जीवन में ज्ञान–कर्म एवं भक्ति का समन्वय होने चरित्र उत्तम बनता है। सात्विकता, सौम्यता एवं सरलता की स्थिति जीवन में आती है। मनुष्य नर से नारायण बनता है। देवत्व की ओर अग्रसर होता है। संसार में जितने भी व्यक्ति महान बने हैं उन सब पर विद्या की देवी सरस्वती की कृपा रही है। जगद् व्यापिनी वीणपाणि सरस्वती की कृपादृष्टि, अनुकम्पा एवं आशीर्वाद सदैव सब पर बना रहे।

सूचना

शुद्धि समाचार के पाठकों से खेद है कि जनवरी 2015 का अंक किसी कारण प्रकाशित नही हो पाया। –प्रकाशक

thearyasamaj.org

उत्तराखण्ड जिला अल्मोड़ा में दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल द्वारा कार्यक्रम

उत्तराखण्ड प्रगतिशील शिल्पकार संगठन (पंजीकृत दिल्ली) के तत्वावधान में, मंडल ने, स्वतंत्रता सैनानी स्व. खुशीराम आर्य के 129वाँ जन्म दिवस अवसर पर आर्य समाज भिकियासैण जनपद अल्मोड़ा में वैदिक धर्म का प्रचार प्रसार कार्यक्रम आयोजित किया। मंडल के महामंत्री श्री चतरसिंह नागर जी ने ग्रामीणों के बलिप्रथा, शराब, गुटखा, मद्यपान छोड़ने व सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने के महत्व को समझाया ।

मुख्य कार्यक्रम 14 दिसम्बर (रविवार) 2014 को कड़ाके की सर्दी व भारी वर्षा के बावजूद आर्य समाज भिकियासैण (अल्मोड़ा) में प्रातः 9 बजे श्री आनन्द प्रकाश आर्य (महासचिव –संगठन) व देवव्रत शास्त्री (मस्जिद मोठ) के ब्रह्मत्व में यज्ञ हुआ तथा स्थानीय समाज के अधिकारी मुख्य यजमान बने।

संयोजक ने स्व. खुशीराम के जीवन वृत्त पर प्रकाश डाला और बताया कि इनका जन्म ग्राम सुकनिया (नैनीताल) में हुआ और वे 86 वर्ष की उम्र में 5 मई 1971 को स्वर्ग सिधार गये। इस अवसर पर स्व. खुशीराम के चित्र का आर्य समाज में अनावरण किया गया तथा महर्षि देव दयानन्द के चित्र लगाए। मुख्य अतिथि श्री चतर सिंह नागर जी ने ईश्वर के निराकार स्वरूप की विस्तार से चर्चा की तथा यज्ञ का महत्व एवं वेद ईश्वरीय ज्ञान है व आर्य (श्रेष्ठ) को कहते हैं समझाया, अतः हमें श्रेष्ठ कार्य करने चाहिए और जीव हिंसा नहीं करनी चाहिए क्योंकि प्रकृति ने मनुष्य को शाकाहारी बनाया है, उन्होंने आगे कहा कि "जब पेट भर सकती हैं तेरा सिर्फ दो रोटियां, फिर क्यों खाता है तू बेजुवां की बोटियां" इस बात का लोगों पर बड़ा प्रभाव पड़ा तथा संकल्प लिया कि हम आगे से शाकाहारी भोजन ही करेंगे। श्री सागर जी ने इतिहास के संदर्भ से बताया कि वर्ष 1913 में पंजाब केसरी लाला लाजपतराय ने उत्तराखण्ड का भ्रमण किया और सभी पर्वतीय क्षेत्रवासियों को इकट्ठा करके उन्हें शिल्पकार नाम दिया व नाम के अन्त में आर्य शब्द लिखने का अधिकार दिलाया। उन्होंने सुकनिया (नैनीताल) में सार्वजनिक सभा करके स्वतंत्रता सेनानी स्व. खुशीराम के नेतृत्व में शिल्पकारों का यज्ञ उपरान्त उपनयन कराया। बाद में स्व. खुशीराम की पहचान "कुमायूं का गांधी" व गढ़वाल क्षेत्र में स्व. जयानन्द भारती की पहचान "गढ़वाल का गांधी" के रूप में हुई। मुख्य अतिथि ने अपील की, कि सच्ची श्रदांजलि तभी होगी जब स्व. खुशीराम जी के नाम पर इस सड़क का नामकरण किया जाये जिसका सभी ने स्वागत किया व ऐसा करने का आश्वासन दिया। दखिण दिल्ली वेद प्रचार मंडल के सौजन्य से सभी ग्रामवासियों, उपस्थित सदस्यों को निःशुल्क सत्यार्थ प्रकाश, स्वर्णिम सूत्र व गुटका, अंडा, मांस, मदिरा, धूम्रपान निषेध व ईश्वरीय चिंतन सम्बन्धी पत्रक वितरित किये गये, तथा स्थानीय समाज को बड़ा यज्ञ कुण्ड, सामग्री भेंट की। संगठन के प्रधान ने कहा कि हमारा उद्देश्य वैदिक धर्म का प्रचार प्रसार करके उत्तराखण्ड की सुदूर जन–मानस को आर्य समाज की विचारधारा से जोड़ना है। उन्होंने मंडल के दिशा निर्देशन व सहयोग करने का आभार व्यक्त किया तथा सभी आयोजकों, ग्रामवासियों का इस आयोजन के लिये धन्यवाद किया।

–संयोजक उत्तराखण्ड प्रगतिशील शिल्पकार युवा संगठन

देश भक्ति

पुकारता, है कारगिल पुकारती माँ भारती ।
खून से तिलक करो गोलियों से आरती।।
देश धर्म पर मिटने को जो मानव तैयार नहीं।
वीर नहीं वह कायर है जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।।

जिस तरह वृक्षों में चन्दन को बड़ा अधिकार है।
पर्वतों में हिमगिरी नदियों में गंगा धार है।।
पक्षियों में जिस तरह गरुड़ सबका सरदार है।
फलों में आम और गुलाब की महकार है।
है कमल पुष्पों में और नागों में शेष नाग है।
ऐसे सब देशों से उत्तम अपना भारत महान है।।

प्रण करते हैं संस्कृति की शाम नहीं होने देंगे।
वीर शहीदों की समाधि को बदनाम नहीं होने देंगे।
जब तक रगों में गर्म खून की एक भी बून्द बाकी है।
भारत की आजादी को गुमनाम नहीं होने देंगे।।

अंकित है इतिहास हमारा त्याग पूर्ण बलिदानों से ।
कौन नहीं है जग में परिचित आर्यवीर सन्तानों से।।

जीना मरना लगा दुनिया में जीना किसी को आता नहीं।
देश हित में जो मरा बलिदान व्यर्थ जाता नहीं।।
दर्द की भी सीमा होती है अधिक सहा जाता नहीं।
वह राष्ट्र गुंगा होता है जो शहीदों के गीत गाता नहीं।।
जिगर उनका ही होता है, कफन बाँध जो फिरता है।
वही कुछ कर गुजरते हैं, वो सौदा सिर का करते हैं।।

धन्य है वीर हकीकत राय, धन्य-धन्य वीर बलिदानी।
देगी नव जीवन जन-जन को तेरी अमर कहानी।।

–संकलन रोनक कुमार शास्त्री
नेत्रंग भरुच

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती शब्द की हिन्दी में व्युत्पत्ति

म – मन को दिव्यता के भाव से, ईश्वर को समर्पित करने वाले।
ह – हर मानव को सद्ज्ञान सिखाकर, सत्य पथ पर चलाने वाले।
र – रवि – सम, प्रकाश पुज, वेदो का अवलोक धरा पर फैलाने वाले।
षि – सिखा शिष्टाचार, लिखा सत्यार्थ प्रकाश।

स – सत्संग, संयम, सेवा, साधना, आराधना का पाठ पढ़ाने वाले।
वा – वासनाओं का त्याग, विषयों से आसक्ति छुडाने वाले।
मी – मीतभाव को जगा, शुद्ध – आहार – व्यावहार का सार बताने वाले।

द – दयाकरो हर प्राणी पर, दशो इन्द्रियों को संयमित कर सदाचार फैलाने वाले।
या – याद करो नित् ओ३म् नाम को बाकी सब झूठ पसार बताने वाले।
न – नर तन से कर जग भलाई , तब होगा मन ईश अनुरुप हवाले ।
न – नम्र, निर्मल, निश्चल, बुद्धि से प्रभु को भज अपने को कर यज्ञ कर्म हवाले।
द – दशो दिशाओं में वेदों की ध्वनि गुंजा ऋषियों की संस्कृति कायम कराने वाले।
स – संत शुर – दानी की भूमिका निभा युग परिवर्तन करने वाले।
र – रग – रग में राष्ट्रभक्ति की भाव जगा, भारत माँ का श्रृंगार कराने वाले।
स – सबका हो कल्याण, युवा पीडी का हो उत्थान, आर्य समाज बनाने वाले।
व – वंश कुल परिवार, समाज राष्ट्रहित सरल दस नियम बनाने वाले।
ती – तीनों तपों से छुटकारे हेतु, सबको वैदिक मार्ग दिखलाने वाले।

जी – जीवन धन्य हुआ आपका, हिन्द को विश्व का सरताज बनाने वाले।

मूर्तिपूजा से हानियाँ

आज का मजमून (विषय) है: एक बड़ी खाई –मूर्त्तिपूजा–। सर्वात्मा, सर्वान्तर्यामी, सच्चिदानन्द परमात्मा अपनी कृपा से इस आशय को विस्तृत और चिरस्थायी करें। मूर्त्ति पूजन का अर्थ है मूर्त्ति की पूजा, न कि ईश्वर की पूजा, क्योकि मतिर्पूजक व्याप्य की पूजा करते हैं, व्यापक की नहीं। व्याप्य उसे कहते हैं जिसमें कोई चीज़ समाई हुई हो और समाई हुई चीज़ को व्यापक कहते हैं। मूर्ति उसकी रखते हैं जिसका कि अभाव हो गंगा की वर्तमानता में गंगा की मूर्ति से क्या लाभ? जो ईश्वर को किसी के द्वारा मानता तथा किसी के द्वारा इच्छा पूर्ति की प्रार्थना करता है, वह मूर्तिपूजक है जैसे कि ईसाइयों के मसीहा और मुसलमानों के मुहम्मद साहब। हम मूर्तिपूजक नहीं है। मूर्तिपूजा एक बड़ी खाई है– जिस में गिरकर चकनाचूर हो जाता है। पुनः उस खाई से निकल नहीं सकता किन्तु उसी में मर जाता है।

पाषाणादि मूर्तिपूजा वेद निषिद्ध कर्म है, इसलिये पाप है। मूर्तिपूजन न करना वेद विहित कर्म है। वैदिक सिद्धान्तों का मण्डन औ वेद–विरुद्ध मान्यताओं का खण्डन दृढ़ता और उत्साहपूर्वक करना चाहिए। इसका लाभ अवश्यम्भावी है। मूर्तिपूजा के दोष– 1. जब कोई किसी को कहे कि हम तेरे बैठने के आसन व नाम पर पत्थर धरें तो जैसे वह उस पर क्रोधित होकर मारता वा गाली देता है वैसे ही जो परमेश्वर की उपासना के स्थान हृदय और नाम पर पाषाणादि मूर्तियां धरते है उन दुष्टबुद्धिवालों का सत्यानाश परमेश्वर क्यों न करें? 2. जड़ का ध्यान करने वाले का आत्मा भी जड़ बुद्धि हो जाता है क्योंकि ध्येय का जड़त्व धर्म अन्तः करण द्वारा आत्मा में अवश्य आता है। 3. जो साकार में मन स्थिर होता तो सब जगत का मन स्थिर हो जाता क्योंकि जगत में मनुष्य, स्त्री, पुत्र, धन, मित्र आदि साकार में फंसा रहता है परन्तु किसी का मन स्थिर नहीं होता, जब तक निराकार में न लगावे। 4. मनुष्यों का ज्ञान जड़ की पूजा से नहीं बड़ सकता किन्तु जो कुछ ज्ञान है वह नष्ट हो जाता है। इसलिये ज्ञानियों की सेवा, संग से ज्ञान बढ़ता है, पाषणादि से नहीं। 5. मूर्तिपूजा करते–करते ज्ञानी तो कोई न हुआ प्रत्युत सब मूर्तिपूजक अज्ञानी रह कर मनुष्यजन्म व्यर्थ खोके बहुत से मर गये और जो अब हैं वा होंगे वे भी मनुष्यजन्म के धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्तिरूप फलों से विमुख होकर निश्चय नष्ट हो जायेंगे। 6. पूजारी परस्त्रियों के संग और पुजारीन परपुरुषों के संग से प्रायः दूषित होकर स्त्री पुरुषों के प्रेम के आनन्द को हाथ से खो बैठते हैं। 7. मूर्तिपूज्य गुडियों के खेलवत् नहीं किन्तु प्रथम अक्षराभ्यास सुशिक्षा का होना गुडियों के खेलवत् ब्रह्म की प्राप्ति का साधव है। 8. किसी प्रकार की मूर्तिपूजा न करना किन्तु मूर्तिमान माता, पिता, आचार्य जो विद्या का देने वाला है और अतिथि जो विद्वान, धार्मिक, निष्कपटी, सबकी उन्नति चाहने वाला जगत में भ्रमण करता हुआ, सत्य उपदेश से सबको सुखी करता है, उसकी सेवा करें। 9. स्त्री के लिये पति और पुरूष के लिये स्वपत्नी पूजनीय है। 10. पाषाणादि मूर्तिपूजा तो सर्वथा छोड़ने और जीवित मूर्तिमानों की सेवा करना ही कल्याणकारी है।

इसलिये सर्वथा पाषादि मूर्तिपूजा सज्जन लोगों को त्यक्तव्य है और जिन्होंने पाषाणदि मूर्ति की पूजा की है, करते हैं और करेंगे वे पूर्वोक्त दोषों से न बचे, न बचते हैं, और न बचेंगे।

जब कोई विरजानन्द से कहता – महाराज! मूर्तिपूजा का प्रसार दिनों दिन बढ़ रहा है तब से सोल्लास कहते 'आर्षग्रन्थों का प्रचार होने दो, मूर्तिपूजा अपने आप समाप्त हो जाएगी' विरजानन्द की यह दृढ़ धारणा थी कि भारत के सब रोगों की एकमात्र अमोघ औषधि है "अनार्षग्रन्थविध्वंसपूर्वक आर्षग्रन्थ प्रचार"। यह प्रयास मैंने स्वामी दयानन्द के शब्दों को पढ़ने के बाद किया है कि जो कोई वेदों के अनुकूल अर्थात् आत्मा की शुद्धि आप्त पुरुषों के ग्रन्थों का बोध और उनकी शिक्षा से वेदों को यथावत् जान के कहता है उसका भी वचन सत्य ही होता है और जो केवल अपनी बुद्धि से कहता है वह ठीक ठीक नहीं हो सकता। शस्त्रार्थ महारथी प. रामचन्द्र देहलवी किसी के प्रश्न के उत्तर में कहा था कि फूल को बनाया भी भगवान ने है और उसके अन्दर वह व्यापक भी है किन्तु मूर्ति में व्यापक तो है परन्तु भगवान ने उसे बनाया नहीं है।

आप आठ आने पर रूपये को चढ़ा रहे हैं आप तो कम कीमत चीजों पर महंगी चीज़े चढ़ा रहे हो। हमें करना तो कुछ और था और हम करने लगे कुछ और–

बुतपरस्तों का है दस्तूर निराला
देखो खुद तराशा है मगर नाम खुदा रखा है।

आप इस मजमून को पढ़ कर मेरे स्वाध्याय को सफल करेंगे, इसके लिये आप सबका धन्यवाद।

–नारायण दास प्रयासी
राजेन्द्र नगर

thearyasamaj.org

समाचार

वेद ही ईश्वर की वाणी–आचार्य गवेन्द्र जी। आर्य समाज रामनगर गुड़गांव (हरियाणा) द्वारा विशाल सप्त दिवसीय आध्यात्मिक दिव्य सत्संग यज्ञ भजन, प्रवचन का कार्यक्राम विभिन्न स्थानों पर आयोजित किया गया। जिसमें आर्य जगत के युवा विद्वान आचार्य गवेन्द्र जी के द्वारा यज्ञ एवं प्रवचन हुए। उन्होंने कहा वेद दुनिया की सबसे प्राचीन पुस्तक है। वेदों में हमारी संस्कृति, धर्म, भक्ति, प्रार्थना, ध्यान, ज्ञान, कर्म, उपासना छिपा पड़ा है। समारोह में योगेश दत्त जी सतीश सत्यम् जी, के भजन हुए। उमेश अग्रवाल जी ने विद्वान वक्ता आचार्य गवेन्द्र जी तथा सतीश सत्यम् को सम्मानित किया।

आर्य समाज खेड़ा अफगान सहारनपुर

आर्य समाज खेड़ा अफगान सहारनपुर में स्वामी श्रद्धानन्द दिवस का कार्यक्रम बड़े उत्साह और उल्लास से मनाया गया। इस अवसर पर प्रथम अनुज कुमार शास्त्री ने यज्ञ कराया। यज्ञोपरान्त श्रद्धेय डा. ओमप्रकाश वर्मा ने स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के जीवन पर प्रकाश डाला।

इस अवसर पर श्री चन्द्रशेखर मित्तल नकुड से व रघुनाथ सिंह चौहान अम्बैहटा से, धर्मवीर जी नकुड से, राजपाल, कुलतन्त सिंह, शशीकान्त गुप्ता, सुरेन्द्र, कंवरपाल सिंह, मास्टर अशोक, यशपाल, राजेश, संदीप, संजय आर्य टौली, वेद भूषण, डा. अशोक, सोनू, जसबीर आदि ने कार्यक्रम मे सहयोग दिया।

–अमित कुमार आर्य, मंत्री

श्री रामनाथ सहगल आजीवन उपलब्धि पुरस्कार से सम्मानित

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं डी.ए.वी कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति के संयुक्त तत्वावधान में डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, राजेन्द्र नगर, साहिबाबाद, गाजियाबाद उत्तर प्रदेश में आयोजित महात्मा हंसराज दिवस समारोह के अवसर पर प्रतिवर्ष दिये जाने वाले सम्मान में श्री पूनम सूरी, प्रधान, डी.ए.वी. कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति एवं आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा ,द्वारा सर्वप्रथम सम्मान आर्य समाज के प्रसिद्ध समाज सेवी श्री राम नाथ सहगल को 90 वर्ष होने पर उनके द्वारा आर्य समाज और डी.ए.वी. को दी गई सेवाओं के लिए आजीवन उपलब्धि पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

हम उनके स्वास्थ लाभ एवं दीर्घायु की कामना करते हैं ताकि वे इसी तरह समाज सेवा करते हुए हमारा मार्गदर्शन करते रहें।

ऋग्वेद मंडल 2 एवम् 3 का मराठी भाषा में अनुवादित वेद का विमोचन

आर्यसमाज संभाजीनगर (औरंगाबाद–महाराष्ट्र) की ओर से आर्यसमाज के उपप्रधान सौ. सविता बलवंतराव जोशी जी द्वारा ऋग्वेद मण्डल 2 एवम् 3 का विमोचन पू. स्वामी धर्मानंदजी महाराज आमसेना गुरुकुल उड़ीसा के करकमलों द्वारा किया गया। जिसमे महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष मा. उग्रसेन जी राठोर, सभा के प्रचारक पं. सुधाकर जी शास्त्री, उपप्रधान दयाराम राजाराम बसैये (बंधु), प्रधान पूज्य ब्रह्ममुनिजी वानप्रस्थी, मा. प्रकाश जी आर्य मंत्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, पू. स्वामी श्रद्धानंद जी संरक्षक सभा, पू. स्वामी व्रतानंद जी गुरुकुल आमसेना और सभी मान्यवरों की उपस्थिति में कार्य संपन्न हुआ।

शुद्धि संस्कार

दिनांक 6.12.2014 को शौर्यदिवस के उपलक्ष में शुद्धि सभा के प्रचारक प्रणव शास्त्री ने सबको यज्ञ कराकर वैदिक धर्म की दीक्षा दी सबने अपने हाथों से आहुतियां दी। इस अवसर पर 12 परिवारों के 65 पुरुष 20 बच्चे 15 महिलाएं शेष नौजवान व बुर्जग ने सहभागिता की।

कार्यक्रम में मुनेन्द्र आर्य ओमपाल सिंह, कौशल आर्य सम्मिलित हुए। छोटी–छोटी पुस्तकों का वितरण भी किया गया।

गुरुकुल हरिपुर (ओड़िशा) का पंचम वार्षिक महोत्सव

आपके प्रिय गुरुकुल हरिपुर, जुनवानी का पंचम चतुर्वेद पारायण महायज्ञ एवं वार्षिक महोत्सव माघ शुक्ल एकादशी, द्वादशी त्रयोदशी, तदनुसार 30, 31 जनवरी व 1 फरवरी 2015 शुक्र, शनि, रविवार को देश के शीर्षस्थ विद्वानों, साधु–सन्तों, सद्गृहस्थियों, आर्यजनों तथा समाज को नेतृत्व प्रदान करने वाले नेतागणों की पावन उपस्थिति में अनेक महत्वपूर्ण, प्रेरक एवं ऐतिहासिक कार्यक्रमों के साथ सम्पन्न होने जा रहा है।

श्री सत्यप्रकाश आर्य जी (उपप्रधान) के द्वारा एकत्रित दान

आर्य समाज विशाखा एन्कलेव उ. पीतमपुरा, दिल्ली	त्रैमासिक	4500/–
श्रीमती सुशीला चावला जी, पीतमपुरा, दिल्ली		600/–
श्री सत्य प्रकाश आर्य जी, विशाखा एन्कलेव उ. पीतमपुरा, दिल्ली		300/–
श्री विजय कुमार उप्पल जी, पीतमपुरा, दिल्ली		100/–
श्रीमती सरला खुराना जी, नील कन्ठ अपार्ट. रोहिणी, दिल्ली		100/–

माह दिसम्बर–14 एवं जनवरी –2015 के आर्थिक सहयोगी

श्री जगदीश चन्द्र गुलाटी जी, बी–1 जनकपुरी, नई दिल्ली	छः माह	6000/–
आर्य समाज विशाखा एन्कलेव उ. पीतमपुरा दिल्ली	त्रैमासिक	4500/–
आर्य समाज बी–2 ब्लाक जनकपुरी, नई दिल्ली		2100/–
श्री जुनेजा परिवार, एफ–ब्लाक, विकासपुरी, नई दिल्ली		2100/–
आर्य समाज इन्द्रानगर, बैंगलौर (कर्नाटक)	मासिक	1500/–
आर्य समाज मयूर विहार फेज–1, दिल्ली–91	वार्षिक सहयोग	1100/–
श्री बालकिशन कपूर जी, ओल्ड राजेन्द्र नगर (पुण्य स्मृति स्व. श्रीमती पुष्पा कपूर जी)		1100/–
आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली	मासिक	1000/–
ब्रिगेडियर के.पी. गुप्ता जी, सैक्टर–15, फरीदाबाद	मासिक	1000/–
श्री नरेन्द्र मोहन वलेचा जी, महामंत्री, भा.हिन्दू शुद्धि सभा	द्विमासिक	1000/–
श्रीमती स्वतन्त्रलता शर्मा जी, वसन्तनगर, बैंगलौर	द्विमासिक	1000/–
श्री लाजपतराय रहेजा जी, ब्रदरहुद अपार्टमेन्ट, विकासपुरी		500/–
श्री विजयगुप्त जी, संरक्षक–भा.हिन्दू शुद्धि सभा		300/–
पं. महेन्द्र कुमार आर्य जी, आर्य ट्रेडर्स सूरजपुर, ग्रेटर नोयडा	आजीवन	300/–
श्रीमती नन्दा रानी राघव, दिलशाद गार्डन, नई दिल्ली		100/–
श्री चमन लाल आर्य जी, पी.पी.–ब्लाक, पीतमपुरा, दिल्ली		101/–

श्री चन्द्रभान चौधरी जी द्वारा एकत्रित दान एवं शुद्धि समाचार के सदस्य

कुमारी गरिमा जी, ऐ.2 ब्लाक पश्चिम विहार, नई दिल्ली	द्विमासिक	2000/–
श्रीमती चन्द्रकला राजपाल जी, पश्चिम विहार, नई दिल्ली	द्विमासिक	1000/–
आर्य समाज आशा पार्क, नई दिल्ली		500/–
श्री यशपाल कटारिया जी, सैक्टर–16, फरीदाबाद, हरियाणा		500/–
मै. छाबड़ा प्राप्ट्रीज, ग्लेक्सी मार्केट, विकासपुरी, नई दिल्ली		100/–
श्री सुखदेव महाजन जी, विकासपुरी, नई दिल्ली		100/–
डा. पुष्पलता वर्मा जी, आर्य समाज विकासपुरी, नई दिल्ली		100/–
श्रीमती ऊषा कुकरेजा जी, आर्य समाज विकासपुरी, नई दिल्ली		100/–
श्रीमती संतोष कोछड़ जी, आर्य समाज विकासपुरी, नई दिल्ली		100/–
श्री एस.के. मल्होत्रा जी, लक्ष्मी फर्नीचर, गुलाब बाग उत्तम नगर		100/–
श्री बी.डी. सोनी जी, लक्ष्मी फर्नीचर, गुलाब बाग उत्तम नगर		100/–
श्रीमती रागिनी चतुर्वेदी, आर्य समाज विकासपुरी, नई दिल्ली, पत्रिका सदस्य		50/–
श्री आर.सी झा जी, अरुणोदय अपार्ट, विकासपुरी नई दिल्ली		50/–
मै. एस.के. फुटवियर, राना पार्क, उत्तम नगर नई दिल्ली		50/–
श्री सुनील कुमार मल्होत्रा, ग्रीन पार्क, नई दिल्ली		50/–
श्रीमती शशि प्रभा कुमार, सै.–15, नोयडा		50/–
श्री मोहन लाल गांधी, फरीदाबाद		50/–
श्री एम.एल चडढा जी, सै.–9, फरीदाबाद		50/–
श्री मनोहर लाल गांधी, श्री निवासपुरी, नई दिल्ली		50/–

श्री जगदीश नाथ भाटिया जी (कृष्ण नगर) के द्वारा एकत्रित दान+सदस्य

मै. मानव संस्कार फाउन्डेशन, नया गोविन्दपुरा, दिल्ली–51		100/–
श्री विजय कुमार पसरीचा, ई–7, कृष्णनगर दिल्ली	मासिक	100/–
श्री हरबंस लाल जी, सिल्वर पार्क, कृष्णनगर दिल्ली		100/–
आर्य समाज चन्द्र नगर, (कृष्णनगर), दिल्ली		100/–
श्री विजय बजाज जी, ऐ–ब्लाक, जगतपुरी, दिल्ली		100/–
श्री राजकुमार जी, गोपाल पार्क, जगतपुरी, दिल्ली		100/–
श्री ऋषिराज जी वर्मा, आर्यसमाज राधेपुरी, दिल्ली		100/–
श्री हरीश खुराना जी, वेस्ट आजाद नगर, कृष्ण नगर		100/–
श्री सुभाष चौपड़ा जी, ओल्ड अनारकली, कृष्णनगर, दिल्ली		100/–
श्री गुरुदीन प्रसाद रुस्तगी जी, अशोक निकेतन, कृष्णनगर, दिल्ली		100/–
श्री मनोहर लाल चौधरी, आर्यसमाज कृष्ण नगर, दिल्ली		100/–
श्री गुलशन चानना जी, आर्य समाज कृष्ण नगर, दिल्ली		100/–
श्री राजीव आर्य जी, आर्य समाज कृष्ण नगर, दिल्ली		100/–
श्री राजेश कालड़ा जी, गीता कालोनी, कृष्ण नगर, दिल्ली		100/–
श्री विमल पाण्डेय जी, बलदेव पार्क, कृष्ण नगर, दिल्ली		100/–
श्री भारत भूषण मेहता जी साउथ अनारकली, कृष्ण नगर, दिल्ली		100/–
श्री विवेक आर्य जी, साउथ अनारकली, कृष्ण नगर, दिल्ली		100/–
श्री गणेश कुमार शर्मा सतनाम पार्क, चन्द्रनगर, दिल्ली		100/–
श्रीमती कौशल्या मक्कड़ जी पुरानी अनारकली, राधेपुरी		100/–
श्री ओमप्रकाश आर्य जी पुराणी अनारकली, कृष्ण नगर, दिल्ली		100/–
श्री यशपाल शर्मा जी, आर्य समाज कृष्ण नगर दिल्ली		100/–
श्री निर्मीश भाटिया जी, सैक्टर–93 बी–नोयडा, उ.प्र.		50/–
श्री कृष्ण कुमार भाटिया जी, मानसरोवर, जयपुर राजस्थान		50/–

thearyasamaj.org

R.N.I. No. 43084/76 Date of Publication 01-2-2015 Delhi Postal R.No. G-3/DL (N) 060/2015-17
Posting Date : 2-3 Every Month

सेवा में

शुद्धि समाचार

फरवरी – 2015

संस्कृत सभी भारतीय भाषाओं की जननी

-डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, राष्ट्रपति

(सभी भाषाविद् इस विषय में एक मत हैं कि संस्कृत विश्व की प्राचीनतम भाषा है तथा ऋग्वेद सबसे अधिक प्राचीन प्रकाशित ग्रन्थ है। भारत की सभी भाषाओं की वह जननी है। पाश्चात्य भाषाओं पर भी उसका प्रभाव देखा गया है। महामहिम डॉ. राजेन्द्र प्रसाद राष्ट्रपति ने 11 नवम्बर 1955 में तिरुपति में संस्कृत विश्व परिषद के वार्षिकोत्सव पर संस्कृत को भारतीय भाषाओं की जननी माना था। हमें इस बात का दुःख है कि क्षुद्र राजनीति से प्रेरित कुछ नेता प्रान्तवाद, क्षेत्रवाद की संकीर्णता में उलझकर इस सर्वसम्मत विचारधारा का विरोध आज भी कर रहे हैं। राष्ट्रीय एकता के संवर्धन हेतु, संस्कृत भाषा की महत्ता असन्दिग्ध है। हम देव भाषा संस्कृत के माध्यम से भारत की सभी भाषाओं को एकसूत्र में पिरो सकते हैं जिसका सांस्कृतिक एवं सामाजिक प्रभाव निश्चय ही सुखद परिणाम देने वाला होगा।)

मुझे इस बात का बहुत हर्ष है कि मैं पहले की भांति इस वर्ष भी संस्कृत विश्व परिषद् के वार्षिकोत्सव में भाग ले रहा हूं, जो वैंकटेश्वर की पवित्र नगरी तिरुपति में हो रहा है। मैं संस्कृत का विद्वान् नहीं हूँ और न यह दावा कर सकता हूँ कि मैं इस भाषा के अध्ययन के लिए अपनी इच्छा के अनुरूप समय दे सकता हूँ।

नम्रतापूर्वक केवल इतना ही कह सकता हूँ कि संस्कृत के प्रति मेरी अगाध श्रद्धा और प्रेम है। संस्कृत के प्रति निजी दृष्टिकोण का जब मैं विश्लेषण करता हूं तो इस श्रद्धा के दो कारण दिखाई देते हैं– संस्कृत भाषा की उपादेयता और हमारी भावुकता। संस्कृत वह भाषा है जिसमें भारत की संस्कृति, हमारे अतीत का गौरव तथा भारत की आध्यात्मिक आकांक्षाएं आदि सभी प्रतिबिम्बित होती हैं। भारतीय ज्ञान–भण्डार सस्कृत के अतिरिक्त पाली और प्राकृत में भी उपलब्ध हैं किन्तु ये दोनों भाषाएं भी संस्कृत से मिलती–जुलती हैं। वास्तव में, पाली और प्राकृत का महत्व स्वयं संस्कृत के अध्ययन के पक्ष में एक प्रमाण है, क्योंकि संस्कृत के ज्ञान के बिना इन भाषाओं को ठीक–ठीक समझना सम्भव नहीं। चाहे हम इस देश के प्रसिद्ध दर्शन–शास्त्र का अध्ययन करें अथवा नृत्य तथा संगीत आदि भारत की ललित कलाओं के विकास की खोज करें या इस देश के प्राचीन इतिहास के टूटे हुए क्रम को जोड़ने का प्रयास करें, इन सभी कार्यों के लिए संस्कृत का ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है।

यह सभी जानते हैं कि सुप्रसिद्ध विदेशी विद्वानों ने अपने गहन तथा आलोचनात्मक अध्ययन द्वारा संस्कृत साहित्य की विशेष सेवा की है। यह बात निर्विवाद रूप से सत्य है कि उन विद्वानों के अध्यवसाय के बिना मानवीय विचार तथा संस्कृति के विकास में संस्कृत का जो ऊंचा स्थान रहा है, उसे समझना असम्भव हो जाता। रोज़र ने भतृहरि के पदों का डच भाषा में सतरहवीं सदी में अनुवाद किया था। अठारहवीं सदी में विलसन महाशय ने काशी में अध्ययन किया और भगवद्गीता, हितोपदेश तथा शकुन्तला का अंग्रेजी में अनुवाद किया। शिलर तथा गेटे सरीखे प्रसिद्ध जर्मन कवि इन अनुवादों से अत्यधिक प्रभावित हुए थे। कौलबुक की चिरस्थायी कृतियां–संस्कृत कोश, हिन्दू विधि, संस्कृत व्याकरण और किरातार्जुनीय का अनुवाद–उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में प्रकाशित हुई। लगभग इसी समय रूसी भाषा में रामायण और महाभारत के अनुवाद भी प्रकाशित हुए। रोज़र और मैक्समूलर ने 1840–70 में वेदों का अनुवाद किया। कई विदेशी विश्वविद्यालयों में 100 वर्ष हुए संस्कृत अध्यापन के लिए पृथक् विभाग खोले गये थे। जर्मन और फ्रांसीसी विश्वविद्यालयों में 1792 में ही संस्कृत–अध्यापन की व्यवस्था हो गई थी। आजकल काबुल विश्वविद्यालय में संस्कृत अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाई जाती है।

इन सब बातों के कारण ही मैं समझता हूं कि संस्कृत का पठन–पाठन बहुत उपयोगी है। दूसरी बात, भावुकता के सम्बन्ध में जो मैंने कही, उसकी आधार भी संस्कृत की उपादेयता ही है। जैसा मैंने अभी कहा संस्कृत साहित्य इस देश का बृहत् ज्ञान–भण्डार है, जिसमें इस देश की दर्शन तथा कला सम्बन्धी विचारधारा सन्निहित है। भारत की राष्ट्रीय महत्वाकांक्षाओं और सांस्कृतिक परम्परा का प्रमुख माध्यम होने के अतिरिक्त, संस्कृत आधुनिक भारतीय भाषाओं का उद्गम–स्रोत भी है। दक्षिण की चार भाषाओं पर भी जो भाषा–विज्ञान की दृष्टि से द्रविड़ कुल की भाषाएं हैं, परस्परिक सम्पर्क तथा आदान–प्रदान के कारण संस्कृत का गहरा प्रभाव पड़ा है।

मैंने प्रायः यह सुना है कि सदियों तक समस्त भारत को एकता के सूत्र में बांधे रखने का श्रेय संस्कृत भाषा को है। मुझे इस कथन में काफी सच्चाई जान पड़ती है। आप कल्पना कीजिए कि दो हजार वर्ष पूर्व जब कि भूगोल तथा विस्तार की दृष्टि से हमारा देश आधुनिक भारत से बड़ा था, दूरस्थ प्रदेशों के निवासी किसी प्रकार पारस्परिक व्यवहार करते होंगे और आपसी सम्पर्क बनाये रखते होंगे। उस प्राचीन काल में जिन दिनों आज की तुलना में यातायात के साधन न होने के बराबर थे, समस्त देश में सामान्य रीति रिवाज धार्मिक विश्वास और लगभग एक जैसी शिक्षा पद्धति किस प्रकार सम्भव हुई होगी। साधारण अभिव्यक्ति और साहित्य का एक सामान्य माध्यम प्राप्त होने के कारण ही सब कुछ हो सका, और यह निर्विवाद है कि वह माध्यम संस्कृत भाषा थी। प्रादेशिक भाषाएं निस्सन्देह विभिन्न प्रदेशों में बोली जाती थीं किन्तु प्राचीन काल में यदि किसी भाषा को राष्ट्रभाषा कह सकते थे तो वह संस्कृत थी। इसका उन दिनों वह पद रहा होगा जो आधुनिक काल में विभिन्न देशों में उनकी राष्ट्रभाषाओं का है। इस देश के सांस्कृतिक विकास में संस्कृत का कितना ऊंचा स्थान है, यह समझने में किसी को कठिनाई नहीं होनी चाहिए।

मेरा यह अभिप्राय नहीं कि हम संस्कृत को फिर से अन्तर्प्रादशिक आसन पर पदासीन कर दें या ऐसा कर सकते हैं, यद्यपि मुझे ज्ञात है कि कुछ लोगों द्वारा इस प्रकार की मांग भी की गई है। इस सम्बन्ध में संस्कृत की व्यावहारिकता तथा वांछनीयता के बारे में कुछ न कह कर मैं इतना ही निवेदन करना चाहूंगा कि आज की परिवर्तित स्थिति में भी संस्कृत का अध्ययन इस देश के लिए निस्सन्देह बहुत मूल्यवान सिद्ध होगा। इस भाषा का पद हम चाहे जो निर्धारित करें यह तो स्वीकार करना ही होगा कि यह हमारी सभी आधुनिक भाषाओं की आधारशिला है।

विभिन्न भारतीय देश एक दूसरे से काफी दूर स्थित हैं और उन सबकी अपनी अपनी विशेषताएं, रीति–रिवाज और परम्पराएं है। यह सब होते हुए भी जब उत्तर भारत का निवासी दक्षिण भारत के जीवन में उसी प्रकार की आस्थाएं और कर्मकाण्ड देखता है, तो वह मुग्ध हुए बिना नहीं रह सकता। कुछ महीने हुए जब मैं वन–महोत्सव के दिन संयोग से हैदराबाद के किसी ग्राम में था मुझे वृक्षारोपण के लिए कहा गया। वृक्ष लगाने से पूर्व जिन मन्त्रों आदि का उच्चारण किया गया और जिस विधि का अनुसरण किया गया, वह ठीक वही थी जो प्रति वर्ष मैं राष्ट्रपति भवन में देखता हूं। यह सादृश्य उन सभी रिवाजों के सम्बन्ध में देश भी में पाया जाता है, जिन्हें हम सोलह संस्कार कहते हैं और जिनका पालन करना प्रत्येक हिन्दू अपना कर्तव्य समझता है।

यही कारण है कि आपकी परिषद् का प्रमुख उद्देश्य संस्कृत के अध्ययन को प्रोत्साहन देना और इस देश में उस भाषा को उसके महत्व के अनुरूप स्थान दिलाना है। निस्सन्देह, इस सभा में उपस्थित विद्वत्मण्डली इस विषय पर विवेचनात्मक रूप से विचार करेगी और इस दिशा में देश का नथ–प्रदर्शन कर सकेगी। इस सत्प्रयास में मैं हृदय से परिषद् की सफलता की कामना करता हूं।

–साभार

विनम्र श्रद्धांजलि

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान ब्र. राजसिंह आर्य का गत दिनांक 5 जनवरी 2015 को आकस्मिक निधन हो गया, उनके निधन से आर्य समाज की बहुत बड़ी हानि हुई है। शुद्धि सभा एवं शुद्धि समाचार परिवार की ओर से दिवंगत पुण्य आत्मा को विनम्र श्रद्धांजलि।

मुद्रक, व प्रकाशक – रामनाथ सहगल द्वारा गुरमत प्रिंटिंग प्रेस, 1337, संगतरासन, पहाड़ गंज, नई दिल्ली–55 दूरभाष : 23561625, से मुद्रित एवं भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा, 6949, बिड़ला लाइन दिल्ली–7 दूरभाष : 23847244 से प्रकाशित। सम्पादक : डॉ. कैलाश चन्द्र शास्त्री